

5 The Summit Within

Honeydew

(English to Hindi Translation)

Before you read

पढ़ना आरंभ करने से पहले

Major H.P.S. Ahluwalia was a member of the first successful Indian expedition to Mount Everest in 1965. How did he feel when he stood on the highest point in the world? Let us hear his story in his words—climbing the summit and, then, the more difficult task of climbing the summit within.

मेजर एच.पी.एस. अहलूवालिया 1965 में माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाले पहले सफल भारतीय अभियान के सदस्य थे। जब वह दुनिया के सर्वोच्च शिखर पर खड़े थे तो उन्हें कैसा लगा? आइए उनके शब्दों में उनकी कहानी सुनें—शिखर पर चढ़ना और फिर इससे अधिक मुश्किल काम अपने भीतर के शिखर पर चढ़ना।

Of all the emotions which surged through me as I stood on the summit of Everest, looking over miles of panorama below us, the dominant one I think was humility. The physical in me seemed to say, 'Thank God, it's all over!' However, instead of being jubilant, there was a tinge of sadness. Was it because I had already done the 'ultimate' in climbing and there would be nothing higher to climb and all roads hereafter would lead down?

सभी भावनाओं में से जो मेरे भीतर उमड़ी थी जब मैं एवरेस्ट के शिखर पर खड़ा था, नीचे के कई मील दूर तक के परिदृश्य को देख रहा था, मेरे विचार से उन्में सबसे प्रमुख विनयशीलता थी। मेरे भीतर का इंसान शायद कह रहा था, 'धन्यवाद भगवान, सब खत्म हो गया है।' हालांकि, उल्लसित होने के बजाय, उदासी की एक आभा थी। यह इसलिए था क्योंकि मैंने चढ़ाई में पहले से ही 'सर्वोच्च' कर दिया था और वहाँ ऊपर चढ़ाई करने के लिए कुछ भी नहीं होगा और इसके बाद सभी सड़कें नीचे की ओर जाएंगी?

By climbing the summit of Everest you are overwhelmed by a deep sense of joy and thankfulness. It is a joy which lasts a lifetime. The experience changes you completely. The man who has been to the mountains is never the same again.

As I look back at life after climbing Everest I cannot help remarking about the other summit — the summit of the mind — no less formidable and no easier to climb.

एवरेस्ट के शिखर पर चढ़ने से आप खुशी और कृतज्ञता की गहरी भावना से अभिभूत हो जाते हैं। यह एक खुशी है जो जीवन भर रहती है। अनुभव आपको पूरी तरह से बदल देता है। एक आदमी जो पहाड़ों पर चढ़ चुका है फिर कभी पहले जैसा नहीं रहता।

जब मैं एवरेस्ट पर चढ़ने के बाद जीवन में वापस मुड़ कर देखता हूँ मैं अन्य शिखर के बारे में टिप्पणी करने से स्वयं को नहीं रोक सकता—मस्तिष्क का शिखर—न तो कम विकट और न ही चढ़ने में आसान।

Even when getting down from the summit, once the physical exhaustion had gone, I began asking myself the question why I had climbed Everest. Why did the act of reaching the summit have such a hold on my imagination? It was already a thing of the past, something done yesterday. With every passing day, it would become more remote. And then what would remain? Would my memories fade slowly away?

शिखर से नीचे आते समय भी, एक बार शारीरिक थकावट दूर होने के बाद, मैं अपने आप से सवाल पूछने लगा कि मैंने एवरेस्ट पर क्यों चढ़ाई की थी। शिखर तक पहुंचने के कार्य की मेरी कल्पनाशक्ति पर ऐसी पकड़ क्यों है? यह पहले से ही अतीत की बात थी, कुछ जो

5 The Summit Within

Honeydew

(English to Hindi Translation)

कल किया था। हर गुजरते दिन के साथ, यह और अधिक दूर होता जाएगा। और फिर क्या शेष रहेगा? क्या मेरी यादें धीरे धीरे फीकी हो जाएंगी?

All these thoughts led me to question myself as to why people climb mountains. It is not easy to answer the question. The simplest answer would be, as others have said, "Because it is there." It presents great difficulties. Man takes delight in overcoming obstacles. The obstacles in climbing a mountain are physical. A climb to a summit means endurance, persistence and will power. The demonstration of these physical qualities is no doubt exhilarating, as it was for me also.

इन सभी विचारों के फलस्वरूप मैंने स्वयं से प्रश्न किया कि लोग पहाड़ों पर क्यों चढ़ते हैं। प्रश्न का उत्तर देना आसान नहीं है। सबसे सरल जवाब होगा, जैसा कि दूसरों ने कहा है, 'क्योंकि यह वहां है।' इसमें बहुत कठिनाइयां आती हैं। मनुष्य को बाधाएं पार करने में खुशी मिलती है। एक पहाड़ पर चढ़ने में बाधाएं, भौतिक हैं। एक शिखर पर चढ़ाई का अर्थ है धीरज, हठ और इच्छा शक्ति। इन भौतिक गुणों का प्रदर्शन निस्संदेह आनंदकर है, जैसा कि यह मेरे लिए भी था।

I have a more personal answer to the question. From my childhood I have been attracted by mountains. I had been miserable, lost, when away from mountains, in the plains. Mountains are nature at its best. Their beauty and majesty pose a great challenge, and like many, I believe that mountains are a means of communion with God.

मेरे पास इस प्रश्न का अधिक व्यक्तिगत उत्तर है। मेरे बचपन से मैं पहाड़ों से आकर्षित होता रहा हूं। पहाड़ों से दूर होने पर मैं मैदानी इलाकों में दुखी हो जाता था, खो जाता था। पहाड़, प्रकृति का श्रेष्ठतम रूप हैं। उनका सौंदर्य और महिमा एक बड़ी चुनौती पैदा करते हैं, और अन्य अनेक की तरह, मुझे विश्वास है कि पहाड़ भगवान के साथ संपर्क का एक साधन हैं।

Once having granted this, the question remains: Why Everest? Because it is the highest, the mightiest and has defied many previous attempts. It takes the last ounce of one's energy. It is a brutal struggle with rock and ice. Once taken up, it cannot be given up halfway even when one's life is at stake. The passage back is as difficult as the passage onwards. And then, when the summit is climbed, there is the exhilaration, the joy of having done something, the sense of a battle fought and won. There is a feeling of victory and of happiness.

एक बार यह प्रदान करने पर, सवाल बना रहता हैरू एवरेस्ट क्यों? क्योंकि यह सबसे ऊंचा है, सबसे ताकतवर और पिछले कई प्रयासों को चुनौती दी है। इसमें किसी की ऊर्जा का अंतिम कण भी लग जाता है। यह चट्टान और बर्फ के साथ एक क्रूर संघर्ष है। एक बार जिम्मा लेने पर, इसे आधे रास्ते में नहीं छोड़ा जा सकता है चाहे किसी का जीवन दांव पर हो। वापसी का मार्ग, आगे के मार्ग जितना ही मुश्किल है। और फिर, जब शिखर पर चढ़ जाते हैं, तब कुछ करने का उन्माद, खुशी होती है, एक लड़ाई लड़ने और जीतने की भावना। जीत और खुशी का अहसास होता है।

5 The Summit Within

Honeydew

(English to Hindi Translation)

Glimpsing a peak in the distance, I get transported to another world. I experience a change within myself which can only be called mystical. By its beauty, aloofness, might, ruggedness, and the difficulties encountered on the way, the peak draws me to it—as Everest did. It is a challenge that is difficult to resist.

दूर से एक चोटी की झलक लेकर, मैं दूसरी दुनिया में चला गया। मैं अपने भीतर एक परिवर्तन का अनुभव करता हूँ जिसे केवल रहस्यमय कहा जा सकता है। अपनी सुंदरता, अलगपन, महाबल, विषमता, और रास्ते में सामना की गई कठिनाइयों द्वारा, चोटी मुझे यह करने के लिए खींचती है—जैसा एवरेस्ट ने किया था। यह एक चुनौती है जिसका विरोध करना मुश्किल है।

Looking back I find that I have not yet fully explained why I climbed Everest. It is like answering a question why you breathe. Why do you help your neighbour? Why do you want to do good acts? There is no final answer possible.

पीछे देखने पर मुझे पता लगता है कि मैंने अभी तक पूरी तरह से समझाया नहीं है कि मैं एवरेस्ट पर क्यों चढ़ा। यह एक ऐसे सवाल का जवाब देने की तरह है कि आप सांस क्यों लेते हैं। आप अपने पड़ोसी की मदद क्यों करते हैं? आप अच्छे कार्य क्यों करना चाहते हैं? इसका कोई अंतिम उत्तर संभव नहीं है।

And then there is the fact that Everest is not just a physical climb. The man who has been to the mountain-top becomes conscious in a special manner of his own smallness in this large universe.

और फिर यह तथ्य है कि एवरेस्ट सिर्फ शारीरिक चढ़ाई नहीं है। वह आदमी जो पहाड़ की चोटी पर गया है इस विशाल ब्रह्मांड में अपने स्वयं के छोटेपन के एक विशेष तरीके से सचेत बन जाता है।

The physical conquest of a mountain is only one part of the achievement. There is more to it than that. It is followed by a sense of fulfilment. There is the satisfaction of a deep urge to rise above one's surroundings. It is the eternal love for adventure in man. The experience is not merely physical. It is emotional. It is spiritual.

एक पहाड़ पर शारीरिक विजय, उपलब्धि का केवल एक हिस्सा है। इसमें इससे भी अधिक है। इसके बाद पूर्ति की भावना आती है। इसमें किसी के परिवेश से ऊपर उठने के लिए गहरे आग्रह की संतुष्टि है। यह मनुष्य में साहसिक कार्य के लिए शाश्वत प्रेम है। अनुभव केवल शारीरिक नहीं है। यह भावुक है। यह आध्यात्मिक है।

Consider a typical climb, towards the summit on the last heights. You are sharing a rope with another climber. You firm in. He cuts the steps in the hard ice. Then he belays and you inch your way up. The climb is grim. You strain every nerve as you take every step. Famous climbers have left records of the help given by others. They have also recorded how they needed just that help. Else they might have given up. Breathing is difficult. You curse yourself for having let yourself in for this. You wonder why you ever undertook the ascent. There are moments when you feel like going back. It would be sheer relief to go down, instead of up. But almost at once you snap out of that mood. There is something in you that does not let you give up the struggle. And you go on. Your companion keeps up with you. Just another fifty feet.

5 The Summit Within

Honeydew

(English to Hindi Translation)

Or a hundred, maybe. You ask yourself: Is there no end? You look at your companion and he looks at you. You draw inspiration from each other. And then, without first being aware of it, you are at the summit.

अंतिम ऊंचाइयों के शिखर की ओर एक कठिन चढ़ाई पर विचार करें। आप एक अन्य पर्वतारोही के साथ एक रस्सी साझा कर रहे हैं। आप जोर से पकड़ते हैं। वह पैर रखने लिए कठोर बर्फ को काटता है। फिर वह दुफंदी बांधता है और तुम ऊपर अपना रास्ता बनाते हो। चढ़ाई कठिन है। आप हर कदम उठाने के लिए पूरा जोर लगाते हो। प्रसिद्ध पर्वतारोहियों ने दूसरों द्वारा दी गई मदद के रिकॉर्ड वहां छोड़ दिए हैं। उन्होंने यह भी रिकॉर्ड किया है कि उन्हें केवल उस मदद की जरूरत कैसे थी। अन्यथा उन्होंने उम्मीद छोड़ दी होती। सांस लेना मुश्किल है। तुम अपने आप को इस काम को करने के लिए अभिशाप देते हो। आपको आश्चर्य होता है कि आपने कभी आरोहण क्यों किया। ऐसे क्षण होते हैं जब आपका मन वापस जाने का करता है। ऊपर के बजाय नीचे जाना बहुत राहत का बात होगी। लेकिन लगभग एक बार में आप तुरंत उस मूड से बाहर आ जाते हैं। आप में कुछ ऐसा है जो आपको संघर्ष छोड़ने नहीं देता। और आप आगे बढ़ते रहते हैं। आपका साथी आपके साथ रहता है। बस और 50 फुट। या हो सकता है, एक सौ। आप अपने आप से पूछते हैं क्या कोई अंत नहीं है? आप अपने साथी को देखते हैं और वह आपको देखता है। आप एक-दूसरे से प्रेरणा लेते हैं। और फिर, पहले इसके बारे में जानकारी नहीं होते हुए, आप शिखर पर पहुंच जाते हैं।

Looking round from the summit you tell yourself that it was worthwhile. Other silvery peaks appear through the clouds. If you are lucky the sun may be on them. The surrounding peaks look like a jewelled necklace around the neck of your summit. Below, you see vast valleys sloping into the distance. It is an ennobling, enriching experience to just look down from the summit of a mountain. You bow down and make your obeisance to whichever God you worship.

शिखर से चारों ओर देख कर आप अपने आप को बताते हैं कि यह सार्थक था। अन्य चांदी जैसी चोटियां बादलों के बीच से दिखाई देती हैं। यदि आप भाग्यशाली हैं तो हो सकता है उनके ऊपर सूर्य हो। आसपास की चोटियां आपके शिखर की गर्दन के चारों ओर एक रत्नजड़ित हार की तरह दिखती हैं। नीचे, आप दूर तक नीचे जाती विशाल घाटियों को देखते हैं। यह एक एक पहाड़ के शिखर से बस नीचे देखना परिष्कार करने वाला, समृद्ध अनुभव है। तुम झुको और जिस भी भगवान की आप पूजा करते हो, उन्हें प्रणाम करो।

I left on Everest a picture of Guru Nanak. Rawat left a picture of Goddess Durga. Phu Dorji left a relic of the Buddha. Edmund Hillary had buried a cross under a cairn (a heap of rocks and stones) in the snow. These are not symbols of conquest but of reverence.

मैंने एवरेस्ट पर गुरुनानक की एक तस्वीर छोड़ दी। रावत ने देवी दुर्गा का चित्र छोड़ा। फू दोरजी ने बुद्ध का स्मृतिचिह्न छोड़ दिया। एडमंड हिलेरी ने बर्फ में केयर्न (चट्टानों और पत्थरों का ढेर) के नीचे एक क्रॉस दफन किया था। ये विजय के प्रतीक नहीं बल्कि श्रद्धा के प्रतीक हैं।

The experience of having climbed to the summit changes you completely.

शिखर पर चढ़ने का अनुभव आपको पूरी तरह से बदल देता है।

5

The Summit Within

Honeydew

(English to Hindi Translation)

There is another summit. It is within yourself. It is in your own mind. Each man carries within himself his own mountain peak. He must climb it to reach to a fuller knowledge of himself. It is fearful, and unscalable. It cannot be climbed by anyone else. You yourself have to do it. The physical act of climbing to the summit of a mountain outside is akin to the act of climbing the mountain within. The effects of both the climbs are the same. Whether the mountain you climb is physical or emotional and spiritual, the climb will certainly change you. It teaches you much about the world and about yourself.

एक और शिखर है। यह आपके भीतर है। यह आपके अपने ही मन में है। प्रत्येक आदमी अपने भीतर अपने स्वयं के पर्वत शिखर को लेकर चलता है। उसे खुद के पूर्ण ज्ञान तक पहुंचने के लिए यह चढ़ाई करनी चाहिए। यह डरावना है, और अपामनीय है। इस पर किसी अन्य द्वारा चढ़ाई नहीं की जा सकती। आपको खुद ही ऐसा करना होगा। बाहर पहाड़ के शिखर पर चढ़ने का भौतिक कार्य भीतर पहाड़ पर चढ़ने के कार्य के समान है। दोनों चढ़ाई का असर एक जैसा होता है। आप जिस किसी पहाड़ पर चढ़ते हैं, चाहे वह शारीरिक हो या भावनात्मक और आध्यात्मिक, चढ़ाई निश्चित रूप से आपको बदल देगी। यह आपको दुनिया के बारे में और अपने बारे में बहुत कुछ सिखाती है।

I venture to think that my experience as an Everester has provided me with the inspiration to face life's ordeals resolutely. Climbing the mountain was a worthwhile experience. The conquest of the internal summit is equally worthwhile. The internal summits are, perhaps, higher than Everest.

मुझे लगता है कि एक एवरेस्टर के रूप में मेरे अनुभव ने उद्यम मुझे जीवन की बाधाओं का दृढ़ता से सामना करने के लिए प्रेरणा प्रदान की है। पहाड़ पर चढ़ना एक सार्थक अनुभव था। आंतरिक शिखर की विजय समान रूप से सार्थक है। आंतरिक शिखर शायद, एवरेस्ट से अधिक ऊंचे हैं।

H.P.S. AHLUWALIA

एच.पी.एस.अहलूवालिया